कविता पाठकक लेल अवश्य पठनीय

सोमदेवक : काळध्वनि

श्रीकान्तक : नान्हू है पुष्पी

कीर्तिनारायण मिश्रक : सीमान्त आ

[illegible]

रमानन्द रेणुक : ओकरे नाम आ

[illegible]

उदय चन्द्र झा 'विनोद'क : अकालि

[illegible]

[illegible]

सुकान्त सोमक : निज सम्बादताक द्वारा

महाप्रकाशक : कविता सम्भवा

रामलोचन ठाकुरक : इतिहासहंता आ

प्रतिध्वनि (अनु०)

कुणालक : शीतक नाम

अग्निपुष्पक : सहस्रबाहु

आजुक कविता

आजुक कविता

रामलोचन ठाकुर

सम्पादित

आजुक कविता



सम्पादन

राम लोचन ठाकुर



अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता

आंजुक कविता

प्रकाशक :
अरुणोदय प्रकाशन
३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,
कलकत्ता-७०००३३

पहिल प्रकाश : विद्यापति स्मृति दिवस, १३९१ (नवम्बर, १९८४)
मूल्य—पाँच टाका

मुद्रक :
पायनियर आर्ट प्रिंटस,
कलकत्ता-५

Aajuk Kavita (1984)
Maithili
Edited by : Ram Lochan Thakur

Rs. 5/-Only

अपना दिस सं

** आजुक कविता वर्तमान परिवेश प्रसूत मानसिकताक प्रतिफलन थिक. ओना आइयो रजनी-सजनी लिखले जाइए— परञ्च से आजुक कविता नहि.

** इच्छा रहितहुँ सभ कविक रचनाक समावेश नहि क पाओल. किछु रचनाकारक असहयोग आ किछु आर्थिक अभावेटा तकर कारण.

** एहि पोथीक पाछां एकेटा उद्देश छल जे आजुक कविताक स्पष्ट चित्र एके पोथी द्वारा पाठकक समक्ष उपस्थित कएल जा सकए. से कतेदूर धरि भ पाओल से त पाठके लोकनि कहि सकताह.

** कवि परिचितिक अभाव रहि गेल. ओना पोथीक कोनो कवि मैथिलीक पाठक सं अपरिचित त नहिञे छथि. संगहि कविक असल परिचय त हुनक रचनाए ने थिक.

** ई पोथी स्वर्गीय रामकृष्ण झा 'किसुन' ओ राज कमल चौधरीक स्मृत्ति मे समर्पित अइ.

—राम लोचन ठाकुर

क्रम

—:०:—

सोमदेव

ग्रामबाला

ग्रामबाला जकरा हिन्दी मे कहैछ "गाँव की गोरी"
इमरा फिल्मि मे भेटली
गाम मे नहि ।
आब त' बाजू, की सूति, की पाति, की हंसुली, की हंरकस
की बुलाकी, की कारा, की छारा
नगरीय प्रदेशे मे भेटत
ब्रह्मबाबाक थाम मे नहि ।

△

छायावाद युगक गाम
कोनो पहाड़ी विहारस्थलीय गाछसमूह पर रहल होयत
जाहि गाछ सभकें पाँखि जनमि गेल
कोनो हँकल डाइनक आँखि रमि गेल ।

△

आ' प्रयोगवादक गाम ?
कतहु विरुप आत्माक लोक मे हुअए । किनसाइत ओतय
अपनहि अपन अपन कविता पढ़ि पढ़ि
सुरासरोवर मे
मूड़ डोलबैत हुअए बकपंचायत ।

△

आ' किछु नवका लक्ष्यहीन अनाम गामक नगर कविता ?
ई त' अकविता अछि
मित्तिनक नाम, की मीताक नाम
प्रीत्तिनक नाम, की नाराबाजीक पलीताक नाम

की अबूझ कल्पवृक्ष पपीताक नाम
की नगर । की गाम
नवीनताक लेल गहने नवीनताक छाँहि ।
भोतिआयल आयातित डिस्कोटाइप आधुनिकताक बाँहि·······

△

येह सभ सोचैत सोचैत एक दिन
ग्रामबालाक तलास मे नगर तजि
अयलहुँ अपन गाम । आ' कि
अपनहि अपनहि एकसरे मिशीन भऽ गेलहुँ
पारदर्शी भ' गेल सोझाक नूँआ । से राडारक
दूरबीन भ' गेलहुँ
तार तार मोंड भ' गेल नूँआक आर पार
फाटल पेओन आ' सड़ल चेफड़ी कें काछि काछि
साफ सुझा रहल छल सुखायल गाछक पीयर कटहरक
खोधल तोधल माँसु-ताँसु·······आँठी-ताँठी·······लस्सा-तस्सा
— एतय, एहि नग्न स्टेडियम लग
कोनो रोक नहि । दाठ नहि । मेलाक ठाठ नहि ······

△

मुदा बंधु !
एहि दृश्यक कारवाँ कें । कारी चश्मा है देखबाक लेल
पाषाणपद्धतिबद्ध दृष्टि चाही । हमर तरल नयन नहि
हमरा त' द्वारे पर साफ साफ दुर्गाक चिनमारि नजरि पड़ली
बिना हत्थाक तरुआरि नजरि पड़ली
आदमक खण्डहरि मे ढनमनायल मानिकथम्ह भयने
नजरि पड़ली सह-सह करैत माता विश्वरूपा !
ओ जँ थूकि देथि त' बहि जयतीह
धनवती फैसनक फेस्टून अनेको अलकरूपा
नखरंजनी । मानभंजनी । कुलगंजनी

नवकी पतरकी कारसन होटक्कात सड़क पर
ओलड़ैत प्लास्टिक-माला । रंगरोगन चढ़ल
कागतक माला

एतय नहि भेटत कतहु
नगर बाबू लोकनिक नीलगत्तावला उपन्यास सभ मे
भेटत कतहु कतहु ।
हम एतय खुरचनपन देह, अमती काँटसन बढ़ल,
खूरसन फाटल, नऽह देखल । मुदा साँच कहै छी
ओइ मे एकोरत्ती नखराक बिख नहि रहय ।
बॉब जकाँ केशो देखल । जे ब्यूटी-पारलक मे
स्मार्ट नौआ द्वारा नहि कतरल छल
मलेरिया, टाइफाइड आकि ममरखा द्वारा
कतरि देल गेल छल
कूड़ापात्र सँ बीछल मालक कबाड़ी-काउन्टर सन । एकटा
आदम तन । कलय उड़ल दर्पन
मूँत सँ सड़ल बिछाओनक पेओन पर लीखल
मिथिला शैलीक काँटक गाछ । आ' नाम गुलबदन
तलाकग्रस्त माया जकाँ
हे यौ ! हमरा त' गामक काया नहि लागल
मानवकी काया जकाँ ।

△

भीत सभ पर उगल पीपर
फाट सँ बहराइत करैत
माटि पर पड़ल चिल्का
पटिया मे लेपटाइल बाघ
मलकिनीक आँगन मे देह तोड़ैत ·· ···अबैत टगहनैत
म्याऽ··· म्याऽऽ···· म्याऽऽऽ

खुट्टा तोड़ैत गाय
अपने गोबर मे गोंतल निङहेस चिबबैत
मूँत चटैत बकरी
अपने जीहक पाजु करैत महींस....
(आह ! अहू बेर बरखा नहि भेल !)
हुँआऽ....हुँआऽऽऽ
नढ़िया की मँगैत अछि ?
राति भे गेल ...
आब कुंडली जकाँ उठत खसत धूँआ
जिम्मरक फुनगी पर । लंक लेत गिरगिट
बाजत टिकटिकिया
घुसुकि आयत कूकुर
चूल्हिक मूँह लग । ऐंठ कूठ ल' क'
आबि गेली म्या
किछु ने किछु करबे करत भूज-भाज
राखबे करत लोक लाज
पखारत अल्मुनियाँक बाटी....
खेलायत भगता । देत गारि । मारत चाटी ...
सभक्य सहती माय
ग्रामबाला । वयः सन्धिए पर झखरि गेली, हाय !!

△

ग्राम मे ग्रामबाला कतय ?
रोगिनी आ कि माया
रस्ता-पेड़ा, बहरी-बसबाड़ि मे । के सोझरबैत अछि
सन्बन्ध । सभ अपना अपना मे अंध
ग्रामक ओहार उठबैत
हारक अकालगुहा सँ बहरा ...ससरैत । चक्र अबैत

कीड़ा आ पील्लु जकाँ फुदकैत । जेरक जेर
एकक बाद दोसर शिशु....
तीला सन पेट । ओइथ सन टाँग
गन्हाइल बेलसन कप्पार
जनमैते चूबैत राब । जेना
सोहरिए मे द' देल गेल हुअए जुलाब !
फाटल बोरिया सं खसैत साबूत दाना
एंऽ एंऽऽ एंऽऽऽ
नव हरमुनियाँ । फाटल भाथी । बेसुर गान बजबैत
के फुर्र दै निकलि जाइछ बाट पर
कदम तर । घाट पर
लटकौने ट्रांजिस्टर । लुंगी आ' रंगीन गंजी
चमेली आ' ताड़ी महका गेल
बोल सहका गेल—
'गोरी तोर गाँव बड़ा प्यारा ।'

△

मुदा हमर ई गाम त' ओइन रंगीन चित्र नहि अछि ।
आ' कि धोखा भेल
हमर ई गामे नहि अछि मित्र ! नहि अछि ?

—:०:—

जीवकान्त

आत्मभक्षी

अपन नाम माटिपर लिखि कऽ
ओकर परिक्रमा चलैत अछि
अहर्निश
अहंकारक रत्न-जटित प्रतिमा कें
दिन-राति पूजल जाइत अछि
सभसँ वरेण्य आ सभसँ पूजनीय
आइ अपने स्वरूप अछि
पोखरिक कछेरमे ठेहुन मोड़ने ठाढ़
पानिक दर्पणमे
अपने स्वरूप कें मुग्ध भऽ निहारैत ......
आजीवन अपने सौंदर्यक महिमामे
गीत गबैत लोक
सगरो संसारमे अछि
लोक अपनाकें खयबामे लागल अछि
अहंकारक यमदंष्ट्रा मे
कसाकस कऽ फाँसल लोक
तृप्त अछि
ओ अपना कें
अपने दाँतसँ
कचकचा कऽ
चिबा रहल अछि
समस्त संसार भाइ नष्ट होयबापर तृप्त अछि

★

छेनी

हमरा भीतर मे एक गोट आकार-रहित
पाथरक खण्ड अछि
ओकरा अर्थ देबा लेल
थोड़ेक हमहूँ परिश्रम कयल अछि
जेना फुर्सति मे छेनी-हथौड़ी सँ
ओकरा ठोक-ठाक कयल अछि
बेसी काल एहि पाथरक खण्ड पर
अहूँ लोकनि अपना मोन कें
अपना छेनीसँ अंकित करैत रहलहुँ अछि
मुदा, से बात अहाँ लोकनिकें
बड़ थोड़ मोन होयत
काल हमरासँ आ अहाँसँ कनेक पैघ अछि
ओकरा हमरा लोकनि अपन जुत्ता तरमे
दाबऽ चाहैत छी
मुदा, ओ हमरा लोकनिक जुत्ताकें
गोजर नहि करैछ
कदाचित् ओकरा हाथक छेनी बेसी
बलगर छैक।
हमरा भीतरक पाथरक खण्ड
छेनीसँ सदा खोधल जाइछ
कोनो आकार देबाक बेगरता
सदिखन लागल रहैछ
मुदा पाथरक खण्ड
अन्तिम रूपसँ आकार पयबा लेल
व्यग्र बड़ थोड़ होइत अछि।

●

कीर्तिनारायण मिश्र

भिनसर भ' गेल अछि

भिनसर भ' गेल अछि
टेबुलपर राखल अछि चाह आ अखबार
आओर दिन जकाँ आइयो बड़ी काल सँ
कौआ कठफोड़वा माल आ कूकुर
केने अछि दिशा कें निनादित
आइयो सूर्यक लालिमा
कुहेस कें नहि चीरि सकल
आ लाले भ' गेल सौंसे सरड़ धुआँह

बासन केर खनखनाएब
गृह-स्वामिनी केर गरमाएब
भ' गेल अछि आरम्भ
बजर' लागल अछि कल पर डोल
भर' लागल अछि 'टब'
मधुमेहियासभ शुरू क' देने अछि घूमब
ओहिना सभ बात
स्थिर, घटनारहित, नियमित आ स्वाभाविक अछि
अखबारक पन्ना में आइयो अछि
हत्या, अपहरण, बलात्कार, साम्प्रदायिक भिड़न्त-वर्तमान

ओहिना किछु कालक बाद
हम भ' जाएब बहार
सड़कक भीड़ देखि लगाएब जनसंख्या वृद्धिक अन्दाज

टी० वी०, टेलेक्स आ [illegible]
शुरू करब काज
काँच मालक बढ़ैत दाम
आ तैयार वस्तुपर सक्त होइत सरकारी लगाम
हैत हमर चिन्ताक कारण
अपन त्रिशंकु अस्तित्व कें बिसरि
भरि दिन करैत रहब कौटिल्य संभाषण
भिनसर भ' गेल अछि आ ओहिना आजुक दिन बीत जाएत

□

एहि अन्ध गुफा मे

एहि अन्ध गुफा मे
पहिल सुरङ्ग सँ भ' कें
दोसर सुरङ्ग बहराएल छैक
दोसर सँ तेसर.... ....
लक्षाधिक सुरङ्गवला एहि गुफा केँर
प्रत्येक सुरङ्ग पर बैसल छैक
विद्युतजिह्व सूर्पनख वज्रदन्त बिडालाक्ष
ओ दबाड़ि रहल अछि
आ हम पड़ा रहल छी
उत्तर सँ दक्षिण
नदी सं पहाड़
समुद्रतल सं ग्रह-उपग्रह धरि
सभतरि प्रज्वलित भ' रहल अछि ओकर अग्निचक्षु
सभतरि प्रक्षेपित भ' रहल अछि ओकर यंत्र व्यूह

कहियो नहि टूट' बला मूर्छा
छीन' लेल हमर अंतिम सांस
ठाढ़ अछि ओकर मृत्युदूत
छेकने सभ बाट
हम कहिया सं दू गोट सुरङ्गक मध्य
लौह-बिम्ब जकाँ गलि रहल छी
ओकर विवेकशून्य संकेत पर
विविध रूपाकार मे ढरि रहल छी।

□

रमानन्द रेणु

आजुक स्थिति मे

आजुक स्थिति मे
हमरा सभ
सोनाक पिंजरा मे बन्न रहैत छी
आ आँखि मुनि
दूनू कान मे आंगुर दऽ कऽ
अनेरे चिचियाइत रहैत छी

गौंआँ सभ
बुझैत अछि बताह
आ धकिया लैत अछि
घर आ घराड़ी

अनगौंआँ सभ
छीनि लैत अछि मुहक ग्रास

आ हमरा सभ
चिचियाइत रहैत छी
आ सपनाक पिंजरा मे
बन्न रहैत छी।

□

मात्र अपना लेल

आइ

एको पाँती

हम लिखि नहि सकलहुँ

जिनगीक बाटपर

हमर अर्थी बाहर भ गेल छल

शब्दक जालमे फंसल

हम शहरिक प्रतिक्षा करैत छी

मानव सं नहि

प्रत्युत मानवीयता सं डेराइत छी

पछिला बेर

ई हमरा विचित्र तरहें गछारने छल

आ अपन गर्म अंक मे

हमरा जिनगीक रस चटौने छल

किन्तु समय साक्षी आछि

हमर अस्तित्व

एकटा लहरी सं गोल-बीतल अछि

स्नरक बात

मला हम की आनब ?

मात्र विरोधाभासे मे

जीबाक आदति पड़ि गेल अछि

धरतीक स्वर्णिम स्वप्न सं

अपना कें फराक राखि

हम एकटा दुनिया बसौने छलहुँ

[illegible]

[illegible]

एतेक पैघ नाम भार

तय कयलाक पश्चात्

हम मात्र अर्थहीनताक राज पौलहुँ अछि

आ मात्र येह अर्थहीन जिनगी

जीबाक हेतु हम विवश छी

जीवनक रक्तहीनता

शून्यता

आ पाप-बोधक दस्तावेज

हमर रचना अछि

शब्दक स्तूप

आ विचारक धमनी

आइ वास्तविक छैक

समग्र

चेतनाक प्रतिफल

प्रतीति छैक

जीवन मात्र धोखा छैक

आवाजक घेर मे

बस एकटा छवि छैक

जीवन साँझ बनि गेल

हाथ किछु लागल नहि

तैयो हम चलैत छी

स्वयं के धोखा दैत

हम आगां बढ़ैत छी

[illegible]
[illegible]
[illegible] थकि
किन्तु आशा के आँगीने
जिबैत रहब
सेहो एकटा पैघ धोखा छैक
जीवनक अर्थ
आइ समग्र रूपें चुकि गेल छैक
यथार्थ कें
ओकर सम्पूर्ण अर्थहीनताक संग
ग्रहण करब
हमर विवशता अछि
सामर्थ्य मे निहित
मात्र येहटा सत्य अछि

अस्ताचल गामी सूर्य के प्रणाम

एक जड़ता
जे मन प्राण आ चेतनपर
पसरल जा रहल अछि निरन्तर
महाशून्यक विस्तार
निघुनन अन्धकार
नहि कोनो ओर-छोर पारावार
काल समुद्रक महावक्ष पर टिमटिमाइत
                    एकटा अग्निपिण्ड
उत्ताल तरंगक बीच संघर्षरत
                एकटा बीर योद्धासन्स
झपट्टा मारैत अनेकानेक बोआर
मधुमाछी जकां लुधकल-टँगरा पोठी इचना
तैयो,
तैयो विजयोल्लासक स्मित हास अछि पसरल
धानक लाबा जकां जल-तरंग पर, सैकत शैय्या पर,
इजोरियाक चटाइ पर !
एकटा मौनक बितान—
शांत निस्तब्ध राति
सुगन्धक बएन बैटैत घर-घर
अलसायल बसात आ
कोनो घर स बहराइत चित्कारक मर्मभेदी स्वर
                        स्त्रीक आर्तनाद
गोलीक आवाज' बम-विस्फोट
थाना पुलिस कचहरीक तमाशा

खेल खतम
व्यवस्था द्वारा अभियुक्तक तलाशीक आश्वासन
तैयो,
तैयो लोक अछि सूतल निसभेर वा गबदी मारने
कोनो गांडीवधारीक प्रतीक्षा मे
    कौनो भगत सिंह
        कोनो आजादक प्रतीक्षा मे !

एकता महायज्ञक विज्ञापन —
देशपर युद्धक सम्भावना
आकाश मे मड़राइत झुण्डक झुण्ड गिद्ध
आणविक शक्ति परीक्षणक समारोह
गृह युद्धक आगि मे पजरैत सम्पूर्ण देश
पाखंडी नेता लोकनिक हाथ मे गुमराह
दिग्भ्रमित युवा-शक्ति
सम्पूर्ण आन्दोलन कें समाप्त करबाक उपक्रम
प्रतिक्रियावादीक ताम-झाम
चमचा-सम्मेलन, पराजित-पराभूत
जयचन्दक राजनीतिक षड्यन्त्र, अन्हरजाली
महारथी महायोद्धा मन्त्र विद्ध
तैयो,
तैयो होमक धुंआ सं लोक नहि भ सकल
        अछि आन्हर
गाम एखनो पजरि रहल अछि
कस्बा एखनो सुनगि रहल अछि
    शहर एखनो लहकि रहल अछि
—:०:—

समानधर्माक नाम

हे हमर समानधर्मा ! समाप्तप्राय अछि
सैंतीस वर्षक कारी-स्याह राति कुहेस
फाटि गेल अछि भिनसुरका लाल प्रकाश मे ई भ गेल अछि स्पष्ट
जे राजनीतिज्ञ अछि पाखण्डी, चोर
की राजनीति, जनतंत्र, समाजवाद आओर न्यायक पाखंड
नहि टिकि सकैछ आब आओर दुर्दान्त अछि मनुक्खक यातना
'टाइगर ब्रान्ड' खोल भ' चुकल अछि उघार
अपन स्थिति-बोध सँ अपस्यांत
भाषण पर भाषण द' रहल सियार नहि भ' सकैछ सफल
आब आओर बेसी दिन
आयातित दर्शन किंवा प्राचीन परम्पराक वैशिष्ट्य पूर्वक द्वारा
कौनल गेल उधार
हाथी, घोड़ा आओर कित्ताक कित्ता खेत-सामन्तवादी अवशेषक
आब नहिं रहि गेल अछि कोनो अर्थ—नग्न यथार्थक समक्ष ।
शोषक अछि थोड़
आओर बहुसंख्यक जनता भ' गेल अछि आश्वासन
आओर भावुकताक शिकार जाबी लागल बरद जकां
काटि रहल चक्कर सरकारी टिटकारी पर मेहक चारू कात
आओर एहि सभ समस्याक मूलमे अछि गरीबी
मुदा नहि छैक तकर ककरो परबाहि राजनीतिज्ञ कें त' कनियो नहि
स्वार्थ सिद्धिक अतिरिक्त
नेता अफसर पुलिस आओर जनता—सभके सभ अछि लागल
भरबा मे अपन खाधि । दुमहला कें चौमहला बनयबा मे
नहि छैक ककरो गरीबी हटयबाक चिन्ता तत्काल
दोहाइ यथास्थितिवाद ! नहि छैक
ककरो पास कोनो उद्देश्य सम्प्रति जखन कि ई अछि सर्वविदित—
        सम्प्रेष्य

जे छोट पूँजी के बनायल जा रहल छैक देश मे पेंच
सर्वहाराक काटल जा रहल छैक घेंट दिने-देखार
आओर एहि अनैतिक पूंजी-विस्तारक व्यापार मे शामिल अछि
मंत्री आओर पुलिस आओर सम्पूर्ण शासन-तंत्र
आइ लोक व्यक्ति सँ वोट बनि कैं रहि गेल अछि
कि नहि रहि गेल छैक
सर्वसाधारणक पास कोनो अधिकार संविधान बनल अछि 'फार्स'
कि नहि रहलैक आब आत्मा नामक वस्तु ककरो पास
राष्ट्रीयकरणक एहि युग मे
अर्थहीनता आओर कायरता आओर भावुकता
बनि गेल छैक लोकक आचरण मिथ्याडम्बर
भ' गेल छैक आदर्श आओर अवसरवाद आध्यात्मिकताक पर्याय
अनिश्चय आओर असुरक्षाक कैंसर सँ रुग्न सम्पूर्ण देश
क' रहल अछि यात्रा हिमालय सँ कन्याकुमारी धरि
रोटी सँ जनक्रान्ति धरि
गाम सँ पार्लियामेंट धरि
कविता सँ एटम धरि""""आओर अपन अपन
लाश कैं उघने चल जा रहल अछि लोक
कान्लिक नारा लगबैत अन्यायक विरुद्ध
सरकारक विरुद्ध
वर्तमान व्यवस्था आओर बुर्जुआ जीवन पद्धतिक विरुद्ध
प्राचीक लाल किरिन मे—
बढ़ि रहल अछि असंख्य-असंख्य नर-मुण्ड मुट्ठी तनने कि आब
बन्द करबाक अछि जय-जयकार साहित्य लेखन
समाप्त करबाक अछि प्रवंचनाक नाटक सम्वादक परिपाटी
[illegible] करबाक अछि जनताक मोह-भंग—हे हमर कर्ण"""हे हमर समानधर्मा

—:o:—

उदय चन्द्र झा "विनोद"

मैडमक नाम एकटा अपील

आइ
एक बेर फेर आयल छी
दिल्लीक दरबार मे मैडम
ओहि बेर असगरे आयल छलाह
विद्यापति ठाकुर
एहि बेर बहुत रास
बहुत रास अनने छी हीरा-जवाहरात
सीताराम कहू मैडम
हमर कोन गतात
हमरा ठामक लोक तऽ एखनो
बुताते लेल चितल जाइ छैं
रौद मे सुखाइक बदला
तितल जाइ छै।

हम बाध्य भऽ कऽ आयल छी मैडम
ओहि बेर राजाक सवाल रहै
एहि बेर प्रजाक सवाल छै
अहीं विचार करू
हमरा की भेटल
बाट कैं पपनी सं बहारैत
वर्षक वर्ष बीतल
करेज मे तिरंगा सटौने

कुहरि रहल छी
अहाँक एहि राज मे
तेना जिबैत छी
जेना मरि रहल छी

अहाँक प्रत्येक सिपहसालार
भूठ बजैत छथि मैडम
अहाँ जुनि बाजब
शान्तिक दादी माँ
अहाँ नहि भूठ बाजब
जाहि घरक मुखिया फुसियाह होइछ
से घर निश्चयतः खकसियाह होइछ
के नहि जनैत अछि अहाँ कें
हे राजीवक माय
दर्दक रथ पर चलैत जीवनक
नहि कीभऽ प्रतिपाय ।

हमरा लोकनि सिनेही लोक छी मैडम
सिनेहे जिबैत छी
सिनेहे बरतैत छी
चान उपजाबै छी
ताराक खेती करै छी
हमरा खाली हाथ जुनि घुराउ
अन्यथा रहि जायब
दिवस रातीक नाकसक नूआ
अकाँ धराउ
हम अपन भाषा मंगैत छी

कोनो चान नहि
अपन स्थान चाहैत छी
कोनो सम्मान नहि ।

बिनती सं बन्दूक धरिक यात्रा पर
जुनि करू बाध्य मैडम
हमर जनकक देश थिक
जतऽ एखनो प्रत्येक बालाक
मोन-प्राण मे बास करैत छथि जानकी
एखनहु जतऽ युवक मे भेटताह महेश
हमर थिक मंडन मिश्रक देश
सुनने हेबै अहूँ काता आ खंडा
अनेरे ठाढ़ केने छी बितंडा
भऽ सकैए नहियों सुनने होइ
कोन बेगरता अछि
बालक बात सं फुरसति होयत
तखन ने काजक बात सुनबै
ओना अहाँ जे अपना कान सँ
नहि सुनैत छिऐ
सत्ते बड़ जुलुम करै छिऐ ।

हमर एहि बिनती
एहि संधि प्रस्ताव कें
नहि ठोकराउ मैडम
हमर एहि सौम्य रूपक
प्रखरता नहि अनठाउ
हमरा देह परक गुदड़ी

आ ठोर परक गीत
क्यो नहि छीनि सकैत अछि
अहाँ सं पहिनो
आर बहुत लोक प्रतापी भेल अछि।

—:o:—

डाइन

जहिया कहियो ककरो
गाम मे खोखी भेलै
बुढ़ियाक माथ सनकि जाइ छलै
नैंना ककरो दुखित पड़ै छलै
पराभव ओकरा भऽ जाइ छलै
एकेटा रंगमे भरि गाम
भऽ जाइत छलै कुंडाबोर
रोगक कारण थीक बुढ़िया
सब उपाधिक कारण थीक ई डाइन।
घाट कें सद्यःस्नाता पत्नी जकाँ
आ कि मन्दिरक सीढ़ी जकाँ देखैत लोक
प्रत्येक दिवड़ा भीड़ कें ब्रह्मक पीढ़ी
बूझि पुजैत लोक
पीकरक पात जकाँ हरहराइत
आ केराक भालरि जकाँ कँपैत लोक
लोक कें अनठा कऽ जिबैत लोक
अनका केहुनियां कऽ आगा बढ़ैत लोक
मगर गाम बुढ़िया से डेराइत रहल
एहि गामक आदि शक्ति थीक ई बुढ़िया।
ई बुढ़िया गाछ हंकैए

ई बुढ़िया काज करैए
हाथ पर हाथ धऽ कऽ जिबैत
बिपति भोगी एहि गामक लोक
औखद बिनु मरैत गेल
मंत्र पर चढ़ैत गेल
एहिना राइ कें पर्वत
आ पर्वत कें राइ करैत रहत
आइ ओकरा डाइन
काल्हि ओकरा चुड़ैल कहैत रहत
एहि गामक धनीक सभक मादे
जिनक खिस्सा पसरल छैक
सब बड़की पोखरि कें खुनौने अछि दैत्य
मनुखक अनमाहि शक्ति कें
अनठबैत लोक
डाइनक बल पर
जीवनकें सपठियबैत लोक।
नहि जानि कहिया धरि
एहि गामक रहतै ई हाल
नहि जानि कहिया धरि
विवेक बाबू रहता कंगाल
हे फेर ककरो खोंखी उठलैए
फेर लोक बुढ़ियाक
फड़क ठकठकौतै
अज्ञानक उचरा में
माउग-पुरुष बोहिअइतै।

—:o:—

सुकान्त सोम

हाल समाचार

वैदिक नदी आ परीकथाक पहाड़ी सभसँ बेढ़ल
पतीस वर्षक विषम दूरी मे पसरल गाम हमर
कुमारि सपना सं अधिक रहस्यपूर्ण, आ
बंगोपसागरक लहरि सं अधिक लयपूर्ण
वस्तु आ स्थितिक समिश्रण सं गुजरि रहल अछि आ
व्यक्ति आ स्थितिक बीच तालमेल स्थापित करैत-करैत
हम किंकर्तव्यविमूढ़ भेल
आत्मीय कह' जोगर संबोधन कें भिड़िया रहल छी।

सभ किछु त ठीकेठाक छै:
गामक विपुल आबादी मे
कोनो ने कोनो घर मे प्रत्येक राति भोज होइते छै आ
हमरा सन कदन्न भोजी कें पकवानक सुगंध लगिते छै····
स्तोत्ररत्नावली या मालिकक दरबज्जा मे
अन्योन्याश्रय सम्बन्ध स्थापित कएल जाइत छैक, आ
लूल्ह-कोढ़ि के अथवलक विरुद्ध संघर्षरत कएल जाइत छै,
गामक मुखिया लोक कें लगातार निर्मम होएबाक
उपदेश दैत-दैत थकैत नहि अछि ···

जड़काला मे बोरसि मे पकाओल जाइए अतीत आ
भविष्य नकली दांत घिसैत
प्लास्टिकक हाथ नचबैत निर्भयताक संगीत कें बरजैत रहैए, एम्हर
हमरा लोकनि अपना रचनात्मक मूल्य कें
बेसी सं बेसी दामपर बेचबाक लालसा मे

प्रतिदिन निर्लज्जताक सीमाधरि
व्यापारी संघ सं अपील करैत छी। ई कोनो
अनट बात भेबो नहि कएल
युग सौदेबाजीक थिकै— से
रचनात्मक मूल्यक हो, चाहे इमानक आ
हमर गाम आ गामक लोक एखन
सौदेबाजी मे मगन अछि।

सत्ते, गाम मे अखन त'
सभ कीछु ठीकेठाक छै।



हमर एकटा गाम रहए

हमर एकटा गाम रहय
गामक कछेर मे बहैत रहै एकटा सदानीरा
जल बड़े शीतल आ सुस्वादु रहै। मुदा, आब ओ
सदानीरा सुखा गेल छै
छहोछित्त भ' दगरि फाटि गेल छै। ओ
हमर माय छलि।

हमर एकटा गाम रहय
गाम कें छाड़ने रहै बड़कीटा बरक गाछ
ओकर छाहरि मे कतेको ने जेठक दुपहरिया बितौने रही
आब ओ गाछ ठुट्ठ भ' गेल छै
कौआ नहि कुचरै छै
कोइली नहि कुहकै छै। ओ
हमर बाप रहथि।

हमर एकटा गाम रहय
गाम कें चारूभर सं बेढ़ने हरियर कचोर बाध-बोन पर
नचैत रहे बरसामनी ''' मलार ' बरहमासा । मुदा,
आब ओ परपट्ट भ' गेल छै
ओहिठाम धूरा उड़िआइत छै । ओ
हमर भाय-बहिन रहय ।

हमर एकटा गाम रहय
गामक एक कात मे लगौने रही एकटा फुलवाड़ी
एक कोन में रोपने रही
रजनी गंधाक एकटा भाड़
ओकर गन्ह में कतेको दिन धरि
मातल रही । मदहोश रही । मुदा, आब ओ
रजनीगंधा मौला गेल छै । ओकरा सं
सुगंधित बसात नहि निःसृत होइ छै । ओ
हमर पत्नी रहथि ।
एकटा सुखायल सदानीरा : माय

एकटा ठुट्ठ बरक गाछ : पिता
परपट्ट भेल बाध —बोन : भाय-बहिन
एकटा मौलायल रजनीगंधा : पत्नी
पारा धोखरल अयना मे नचैत
मत्तरिटा अपरिचित प्रतिबिम्ब मे परिचित
एकटा हम । आ,
हमर तरबातर धरती
तरहत्थी पर अटकल आकाश
छाती पर दौड़ैत ट्राम '''
—:—

महाप्रकाश

जाबीक बिरोध मे

ओ आदमी जे कलम सँ दिशा कें
अनुप्राणित करैत छल
ओकर पत्नीक बलात्कार भ' गेलैक
ओ आदमी जे आंकड़ा आ हिसाबक फरेबी चालिकें
परखि लैत छल । ओ सड़कक कातमे लवारिस
लहास भ गेलैक । ओ युवा जे कविताक दुनिया सं
निकलि । अपन सपनाक संसार हेरैत छल
सर्द-शहीद भ' गेल । ओ आदमी जे अपनेक
दहिना-बामा हाथ । कवच कुण्डल शिरस्त्राण छल
बागी गुरू द्रोण के हेरि रहल अछि ।

एहि महान देशक संविधान पर
कुण्डली मारि । जखन सं बैसल अछि
प्राइमरी स्कूलक मास्टर । समग्र
जनकल्याणी धारा-उपधारा गौंत गंध
गंगाजल बनि गेल अछि

एहि प्रचंड वैतरणी मे । माय धरिक आँखि
सरकारी आश्वासन जकां बाँझ बीरान बनल अछि
एहि बाँझ बीरान मे के अछि पीड़ित
के अछि पीड़क । के अछि पीड़ाक साक्षी ?
इतिहासक अन्हार गली सँ ल' क' । वर्तमानक
इन्द्रधनुषी रोशनी मे हमर कवि लगातार
बतहा महादेव जकां बौआ रहल अछि

किन्तु हमर एहि शान्ति प्रिय
ऐतिहासिक न्याय व्यवस्था मे । कतहु
कोनो तरहक चर्चा अपेक्षित नहि होयत
कविक शब्दावली । लवारिश कूकुरक हेंज
चतुर्दिक भुकैत अछि । भुकत किएक ?
अहाँ कहैत छी मुदा । मुदा अहाँ जानी
विश्वास मानी महामहिम । ओ आदि कविक कन्या
कविता कामिनी । हजार बेर बलत्कृता होइतो
पद्म पराग पर विलसित सरस्वती अछि ।

□

बयान

माननीय न्यायमूर्ति
हम जे कहब सत्य कहब
सत्य छोड़ि किछु नहि............
मामला अछि जे हमर नाना
ववक्त इलाही फैत कैं, हमर माय कैं
मशहूर ओ मारूफ सोनाक चिड़ै
ई जागीर अता कएने छलाह ....
नचैत धारक कात मे सामवेद गबैत लोक जन
क्षमा करब न्यायमूर्ति
हम कने अवांतर चल गेलहुँ
मुद्दा अछि जे हमर माय आब बूढ़ि
जकर कथनी आ करनी मे
बरमहल एकटा पैघ दरारि

लज्जाहीन गरीबी जकां
हुल्की मारैत छैक
............हमरा शक अछि
ओ हमरा एहि जागीरक
वारिस नहि घोषित करत ।
हमर समटा मलियौत आ पिसियौत भाय
जगह-जगह गोलबन्द भ' रहल अछि
वातावरण मे एकटा हौलनाक कनफुसकी—
पसरि रहल अछि
ई सभ क्यो चोर उचक्का अछि
गाम सं शहर धरि एकरा
देखल जा सकैत अछि ।
न्यायमूर्ति हमर पिता आ पित्ती
एहि जागीरक प्रति न्याय आ प्रेम
नहि बरति सकलाह, सिर्फ सुविधाक गाय
दुहैत रहलाह...... बांसुरी पर
बेसुर राग फुकैत रहलाह............सिर्फ
हम अदालत सं दरखास्त करैत छी
ई जागीर । ई बेजुबान गाय हमरा
सिर्फ हमरा दिआ क' हमर
पुस्तैनी हक आ हकूक कें बहाल
आ बरकरार राखल जाय

•

कुलानन्द मिश्र

ओना कहबाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग

ओना कहबाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग
जेना,
जंगली फूल सँ टपकैत ओस
अहांक सती-देह
हमर थकुचल पौरुष
डीह-डिहवार मे नहु-नहु पसरैत सान्ध्य-राग
उतरैत रातिक चिन्ता मे
सड़क गाछ तर
सिपहा लगाओल बैलगाड़ीक पांति
पजेबाक चूल्हि सँ नमरैत धुंआ
ओना कहबाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग।

जेना,
हमरा सँ फराक हमर चेतना
टूटल-भाङल सपना जकां
हमर सभक खण्डित एकान्त
रौद मे हकमैत कुकूर
केरवी आमक गाछ पर झटहा फेकैत टिंकू
बूथ दिस छरकैत जनतंत्री भीड़
ब्रेस्तक किरायेदारक युद्ध विरोधी जत्था
पटमी लीपि मे अंकित शांति प्रस्ताव
ओना कहबाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग।

जेना,
अमिताक बेगरता तर निश्चेष्ट हमर कविता
प्रियजनक असुरक्षित सुखुम सनेस
फूलक टिपसौसी गन्ध
पीठ लागल ककरो सिसकी
माछ आ लहरिक प्रेम
सांस आ सीनाक बन्धन
कुहेंत शहरक चौबट्टी पर अहां सँ हमर हड़बड़ भेंट
ओना कहबाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग।

तनक पाप
मनक पाप
कतेको बरखक सहबासक आगां अपरिचयक लज्जा
कोठी पर नोर जकां झहरैत कल्हुका कथा-व्यथा
पोखरिक पानि मे पैसैत घाट
ओ गीत
ओ गजल
आदिम वासनाक कांपैत स्वर मे गाओल
ओना कहबाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग।

बरखा सं छद-बद भेल बंसबिट्टी
ओलती सं चानीक ओछार
नाभि-लग गड़ैत कांट
ककरो नाम लैत हम आ डूबैत कपोत
दिन भरिक कमाइ —उदासी
राति भरिक सेहन्ता पिआस
गाम सं ताजमहलक दूरी
कब्बर मे जेना सं पहिने तरुआरि उठेबाक विवशता

किछु करबा नहि करबा पर ओझराएल निर्णय
बढ़ैत हाथपर शंकाक लाठी
फांस मे दबलैत गरा-ओड़ी
ढहल घर
भखरल चबुतरा
ओना कहबाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग

□

अपना गामक नाम एकटा शोक गीत

बहुतो बुझनिहार लोक जकां
स्वर्ग-नर्क मे हमरो कोनो विश्वास नहि अछि
मुदा स्वर्गक नाम पर आस दैत सुख
आ नर्कक नाम पर गुम-सुम दुःखक
कल्पना अखन करैत छी
हमरा बहुतो गाम जकां
अपन गाम मन पड़ैछ

हमर गाम
एकटा धारक किनहेर मे
कोनो भसिआएल बबुरबन्ना-सन
गारा जोड़ी कयने ठाढ़ भेल
चालिस-पचास टील्हनुमा घर सभक नाम थिक
जत' जाड़ आ बरखा त'
सभ साल अबैत छैक स्पष्टा दै

मुदा ओहि बाढ़ु भूमि-झामि
कमे काल आइत अछि बसन्त
हमर गाम
शहर-ठाम थिक
कमे-कमे निरन्न होइत माथ
दिन-दिन उघार होइत राधा
आ एहने किछु आर लोक सभक
जकरा सभक हारल प्राण
सपनो देखैत काल घिघिआइत छैक
आ जिनगीक छोट पैघ सभ मोकाम पर
पहुँचबाक क्रम मे रिरिआइत छैक
शहर-ठाम थिक ओ
किछु झांपलो लोक सभक
जकरा गाम मे रहला सं लगैत छैक
जे गाम मे लोक अखनो रहैत अछि
हमर गाम
एकटा एहन कुशल हाथक रचना थिक
जकरा लग कौशल त रहैक नैसर्गिक
मुदा सामग्रीक निरछाहे अभाव रहैक
घर सभक कोनटा लागल केराक थम्ह
किछु बांस-बबूर
किछु आम-लीची
दू-चारि गाछ कटहर-महुक
त' दस-बीस गाछ ताड़ो खजूरक
जत'-तत' दस-बीस गाछक आमक गछुली
देवी-देवताक पीड़ी-गहबर सेहो दू-चारि ठाम
हैंडपम्पक लगाओल टूटा सरकारी चापा कल

आ पोखरिक भीड़ पर प्राइमरी स्कूलक खण्डहर पर
एकदम पुबारी कात भेटत
डोमटोली सं भिड़ले कच्ची सड़कक बामा कात
धीर पती जकां ठाढ़ अकादावत बटवृक्ष
हमरा गामक खास आकर्षण थिक

हमरा गाम मे बहुतोरास वस्तु अहां के नहि भेटत
अभाव बरोबरि एहि गाम के
स्थायी भाव रहलेक अछि
हमरा गामक स्कूल मे राष्ट्र-ध्वज फहराओल जाइछ
एहि स्कूलक बूथ मे लोक भोट खसबैत अछि
अपन एहि देश मे तीन युग सं
अपने सभक राज थिक
तखन हमरा गाम सं पटना धरि
सड़क कहिया बनतै
ककरो बुझल नहि छैक
दिल्ली त' फराके सुनैत छिये
जे बड़ी मानी दूर छैक
प्राइमरी स्कूल जकाँ कोनो स्वास्थ्य केन्द्र
एखनो धरि नहि भेल छैक एहि गाम मे
एकटा पुलिस फांड़ी
नबभर इम्हर जरूर स्थापित भेलैक अछि
गामक दूटा बौड़ायल छौंड़ा
पुलिसक नजरि मे चढ़ल छैक
सुनैत छी, इएह सभ
खानगी मे कहैत घुरैत छैक
जे हाथ पसारब सं हाथ उठालेब

[illegible]
सभठाम जकां अहू गाम मे
सोचल त इएह गेल-रहैक
सभक ठोरपर सुखक बंशी रहतैक
आ सभक भुज-पाश मे
लजाइत भेटतीह एकटा सत्यभामा
एकटा सुभद्रा
कि एकटा लखिमा ठकुराइन
पोथी सभक पाँती मे
मात्र सुखक आखर अंकित रहतैक
कोनो सूर्य
कि चन्द्रमा
कि आकाश बांटल नहि जायत
मुदा तेना क' वास्तव मे भेलैक नहि
आ बीत-बीत मुट्ठी-मुट्ठी
बुधियार सभक टोल मे बंटा गेल
सुख-शांति बखरा लागि गेल
आ आत्मा तक बांचल नहि दद
आपकताक नाम पर
कठियारी मे सङ्ग देब
आब एकटा पेंच बात बुझल जाइत छैक
सोचल त नहि गेल रहै
मुदा दुःखक आखरे अधिकांश लोक पढ़ल अछि
सुखक आखर आँखि देखबा लेल
सीता कें गाम पर त्यागि
परदेशक आकर्षण मे दौगैत
कतोक राम कें विवश भ' जाय पड़लनि अछि

बहुतो दिन सं गामक हमहूँ अनुगामी छी
हमरे जकां आइ क्यो फेर गाम सं
अपना मने अपन सुखक खोज मे परायल अछि
आइ फेर एकटा माय जोर सं चिकरैत छेक
फेर एकटा बाप माथ पर हाथ ध'
सांझे जे असोरा पर बैसल छेक
से भोर भ' जाइ छेक एहि गाम मे

अही गाम मे हमर माय
लाज सं तीतल अपन मन मे
आन्दोलित चित्त सं
कहियो कामना हमर कयने रहय
ठेहुनिया देबा सं
नगरक अनचिन्हार सड़क पर ठाढ़ हेबा धरि
हम अही गामक कण-कण मे
अनुगुञ्जित जीवन-राग
कान पाथि सूनल अछि
आ छाक भरि गाभोल अछि
हमर संभावनाक अभिलषित कथा
हमर शैशवक अबोध कथा
आ हमर यौवनक रमसैत कथा
अही गामक बेहोश परल धरती मे अंकित अछि
हमरा पितामहक श्राद्ध मे दागल गेल सांढ़
आ हमरा पितामहीक सारा
अही गामक कुसियारक खेत मे
आ धारक सटले कात मे
अखनो मौजूद अछि
काल्हि एहि हीत-मीत गाम मे

जं अपन गामक अनुभूति स्तम्भित लागत
कत' जाक' सरिपहुँ तखन
ताकब अपन गाम
जत' हमर पुरखाक पौरुख अर्पित अछि
आ केहनो झंझावाती मौसम मे
हुनक संयमक अद्भुत मर्यादित वृतान्त
आहि गामक एहि सिमान सं
ओहि सिमान धरि अंकित अछि
आत्मा सङ एना क' एक भेल
पार्थिव सम्बन्ध सं जोड़ल अपन गाम
कर्ज वा उधार मे भेटत कत'
अपने सं हैत की संभव कहियो
फेर सं एकर ओरिआओन कयल
अपना गामक लेल ई शोक गीत
हमरा मोनक कोनो अपशकुन नहि
मात्र हमरा मनक
एकान्त ममताक उद्वेग थिक
ओना हमरा गामक लेल
किछु ने किछु सिनेह सं सोचब
निश्चिते बहुत जरूरी छेक

—:—

रामलोचन ठाकुर

अजगुत देश

ई आकाशवाणी थिक
विचित्र सम्वाद पढ़ि रहल छी
आचार्य अनटोटल
हेमनिष्ट मे
भारतीय भू-सर्वेक्षण विभाग कें
एकटा नव देशक पता लगलैए
जे
तीन कात नदी
आ एक कात पहाड़ सँ घेरल अछ
नामकरण कएल गेलैए
अजगुत देश
ओना
किन्तु भू तात्विक लौकनिक मतें
ई देश नव नहि
बड़ पुरान थिक
इतिहास सँ पुराण धरि
जनक
याज्ञवल्क्य
गौतम
कपिल
कणाद ''' '' क
जन्मस्थान
मिथिला
तिरहुति वा
विदेह भूमिक चर्च

एकर ज्वलंत प्रमाण थिक
मुदा
भू-सर्वेक्षण विभाग
एकरा नहि मानैछ
ओकर कहब छैक जे
पुराण कथित
मिथिला देश मे
जनमल छलाह
शिव सिंह
अपन
भू-भाषा-संस्कृतिक रक्षार्थ
कएने छलाह संघर्ष—आजीवन
एक नहि
सतरह खेप
भेल छल पराजित
दिल्ली सुल्तान
तेहने होइत अछि
मिथिलाक सन्तान
परञ्च
एहि अजगुत देशक
मनुक्खक आकृति आ
पशुक प्रवृति वला जीव
ने त माउग अछि
ने पुरुष
तें ई देश
आर जे कोनो देश किएक ने हो
मिथिला देश नहि भ सकैछ

किन्हहुँ नहि भ सकैछ
ओकर कहब छैक जे
पुराण कथित
मिथिला देश मे
जनमल छलाह
कविपति विद्यापति
घोषित कएने छलाह
बालचन्द विज्जावइ भाषा
गओने छलाह
परम प्रिय
पावन
तिरहुत देश

परञ्च
आजुक
चमरियाक तेसर सन
हाँजी-हाँजी करैत
नाचि-नाचि
जनगन-मन गबैत
कविनामधारी जन्तुक ई देश
आर जे कोनो देश किएक ने हो
मिथिला देश नहि भ सकैछ
किन्हहुँ नहि भ सकैछ

ओकर कहब छैक जे
पुराण कथित
मिथिला देश मे
जनमल छलीह

जगजननी जानकी
धरती पुत्री
सीता
जनिका
अपमानित कए
कटओने छल
अपन
नाक
कान
लंकापति रावणक बहिन
सुपनेखा

परञ्च
आजुक
सुपनेखाक तरबा चटैत
माँ मैथिली कँ
नाक
कान
काटि
घर सँ
बेला देनिहार
सन्तानक ई देश
आर जे कोनो देश किएक ने हो
मिथिला देश नहि भ सकैछ
किन्हहुँ नहि भ सकैछ

ओना
अनुसन्धान चलि रहल छइ

देश-बिदेश सँ
भू-तात्विक
नृतात्विक
सभ आबि रहल छथि
बात
आगू बढ़ि रहल छइ
तेँ
बिचित्र सम्बाद
आजुक लेल
एही ठाम
शेष भेल
□

एहि संएतीस बर्ख मे

आ
ओकर पघ्र थकमका जाइ छइ
हाथक टुनटुनाइत घंटी
चुप भ जाइ छइ
कातक
कोनो दोकान सं अबैत
रेडियोक आवाज
राष्ट्रपतिक भाषण
राष्ट्रक नाम
प्रगतिक लेखा-जोखा
आजादीक

संएतीसम बषगांठ पर
'संएतीस बर्ख !'
ओ निसास छोड़ैछ
आइ सं
ठीक संएतीस बर्ख पहिने
ओ कलकत्ता आयल छल
ओहिना मन छइ
सिनेमाक रील जकाँ
समस्त घटना
जेना आँखिक सोझा
नचैत होइ
एक दिन
निसाभाग राति मे
जखन कि सगरो गाम निसबद्द छलै
झुम-झुम करैत
जुमि गेल छलै
गोर चालिसेक पुलिस
घेरि लेलकै
चारूकात सं ओकर घर
घरक फट्टक तोड़ि देलकै
आ
ओकर बाप के
पकड़ि क ल गेलै
ओना ई गप्प
ओकरा बाद मे पता लगलै
जे ओकर बाप
सोराजी दल मे छलै

आ ओकरे गामक जमींदार
सतलरेन बाबू
ओकरा पकरबओने छले
जे
पुलिसक संगहि छले
से त
ओ अपने आँखिए
देखने छले
तकर
मास छ-एक बाद
एक दिन ओ सुनलक
'देश अजाद भ गेले
मोराजी दल जीति गेले'
आ
तहिया ओकरो मन
खुसी सं नाचि उठल छले
लोक सभ कहै जे
आब ओकरो बाप कें
जहल सं छोड़ि देते
ओहो
घुरि गाम एते
मुदा
दिन पर दिन
मास पर मास
बीति गेले
ओकर बाप
घुरि क नहि एले

आ
सतलरेन बाबू
ताही बेर
दिल्ली गेले
लोक सभ कहै
मिनिस्टर बनि गेले
आ
ताही साल
अगहनी मे
ओकर माम
गाम गेल छले
घुरती काल अपने संग
एकरो कलकत्ता लेने एले
'सरो,
ई रिक्सा स्टेन्ड बना लेलन ...'
आ
तराक द ओकरा छाबा पर
डंटा पड़ैत छइ
ओ खिसिआइत जाइए
टाक पर नजरि पड़ैत छइ
कतेक पातर भ गेलैए
एहि संइतीस बर्ख मे —
एहि संइतीस बर्ख मे—ओकर हाड़ कतेक
अगछियार भेलैए
एहि संइतीस बर्ख मे—
एहि संइतीस बर्ख मे—ओकर डांड़ कतेक झुकलैए
एहि संइतीस बर्ख मे—

एहि सैंतीस बर्ख मे   पुलिसक लाठी कत्तेक
                    सबधानल भेलैए
एहि सैंतीस बर्ख मे—
एहि सैंतीस बर्ख मे —ओकर शादि कत्तेक दिनाओन भेलैए
एहि सैंतीस बर्ख मे—
आ
ओकर पएर
अपनहि बढ़ि जाइ छइ
घंटी—
टुनटुनाय लगै छइ
'इन्ने कहां ?
इधर चलो'
आ
पुलिसक धक्का सँ
ओ खसैत-खसैत बचैए
सामने थाना छइ
अहिया
    ओ कलकत्ता आयल छल
        ई थाना नहि छलै
ओ अपन गामक
    असगरे छल
एखन
गोर चालीसेक हेतै
केओ ठेला ठेलै छइ
        केओ रिक्सा टनै छइ
            केओ भाका उघै छइ
एहि बेर

ओ गाम गेल छल
सगरो दुसधटोली भम्ह पड़ै छलै
एकोगो पुरुख-पातक पता नहि
जेना ओइ बेर भेल छलै
जखन कि
ओकरा बाप कैं
    पकड़ि क ल गेल छलै
सगरो दुसधटोली
        पड़ाइ लागि गेल छलै
ओना
एहि बेर लोक
डरेँ गाम छोड़ि
        पड़ाएल नहि छलै
पेटक खातिर
        पड़ाएल छलै
            दिल्ली
                पंजाब
ओ सोचैए
एहि सैंतीस बर्ख मे
        कत्तेक टोल
        कत्तेक गाम
            खाली भेल हेत
एहि सैंतीस बर्ख मे
एहि सैंतीस बर्ख मे कत्तेक जुआन-जहान
अपन लोक-वेद
        गाम-घर
            तेजने हेतै
एहि सैंतीस बर्ख मे

एहि संइतिस बर्ख मे रोटी कत्तेक महग भेलैए
एहि संइतीस बर्ख मे
एहि संइतीस बर्ख मे मजूरी कत्तेक सस्त भेलैए
एहि संइतीस बर्ख मे
एहि संइतीस बर्ख मे थानाक संख्या कत्तेक बढ़लैए
एहि संइतीस बर्ख मे ...
'साला निकाल पांच ठो रुपेया'
'पांचगो कहां स आयगा हुजूर
आइ भोर स त
        दुइएगो कमाया हाय ...
        हमरा लाइसेन्सो हाय ...'
'लाइसेन्स का बच्चा ...'
आ
एगो जबर्दस्त थापर
ओकरा कनपट्टी मे लगो छइ
ओ चकभाउर द
            खसि पड़ैए
आँखिक आगू
            अन्हार भ जाइ छइ
ओकर डांड़ मे खोंसल बटुआ
पुलिसक हाथ मे झुलै छइ
ओकर पसेनाक कमाइ
            दू गो टाका
                पुलिसक हाथ मे उड़िआइ छइ
                पुलिस बिहुंसैए
कालक
कोनो दोकान सं

रेडियोक आवाज अबै छइ
राष्ट्रपतिक भाषण
        राष्ट्रक नाम
            प्रगतिक लेखा जोखा
आजादीक
    संइतीसम वर्षगांठ पर
            रिक्सा वाला
            एखनो बेहोश पड़ल
            ओकरा चारूकात
            अन्हार छइ
            गुज अन्हार

(स्व-निर्मित आतंकवाद आ, अलगाववाद के समाप्त करबाक लेल सत्ता पंजाब मे सेना कें तैनात क क युद्ध घोषणा क देलक । एही बहन्ने समस्त देश मे कार्यरत जनवादी कार्यकर्त्ताक गिरफ्तारीक योजनाआ मंसूबा बन' लागले)

कुणाल

युद्ध प्रसंग (१)

पददलित लोकक देश
दलमलित भेल आइ
धर्मोन्माद बढ़बेत
अफवाहक रंगीन दुनियां बनबेत
आरंभ भ गेल

महान षड्यंत्रक विराट प्रदर्शन
श्मशानक इच्छा व्यक्त केलकाह

आइ अहल भोरे/आर एक बेर
हथकड़ी झनझनाएल हेते
कोनो मुक्तिकामी बन्हाएल हेते
आइ अहल भोरे/आर एक बेर
सुगन्धि औनाएल हेते
सिनेह मुरझाएल हेते/आर एक बेर
सौन्दर्य मौलाएल हेते
सत्यक गरदनि दबाएल हेते

आइ अहल भोरे/आर एक बेर
फेर कतेक जोरे/आर एक बेर
मुक्तिक सपत दोहराएल गेल हेते
शहीदक रक्त फेर खलबलाएल हेते
फेर कतेक जोरे/आर एक बेर

सभ ठाढ़ होएत/आर एक बेर
दानव नृशंस
ने भागत ने बांचि सकत
से दिन तेहन दूर नञि/से दिन ततेक दूर नञि

से दिन तेहन दूर नञि
श्रमजीवीक उदय हेतै
परजीवीक अस्त हेतै
से दिन ततेक दूर नञि/सभ उठि ठाढ़ होयत
बोनिहार आ रेजा
टकराएत निर्णायक लड़ाइ मे
बंदूकी सभ्यता आ बारूदी व्यवस्था स
शोषणक कानून आ आतंकक संविधान स ।

से दिन तेहन दूर नञि
इएह त देबाक छइ
प्राप्य अपन लेबाक
हाथ उठा देबाक
आक्रमणक मुद्रा मे

□

युद्ध प्रसंग (२)

माउग कानि रहलए
आ संसार पूर्ववत चालू अइ
माउग कानि रहलए
आ लोक बाट पर गुड़केत चालू अइ
माउग कानि रहलए
आ देवाक सभ स अद्भुतक विस्फोट होइए

धूंआक स्तूप उठैए
एमहर स
ओमहर सं
सभठाम स
हलदिली, हड़बड़ी
अनघोल, आममर्द
अजीव सन हड़कम्प मे
एकटा गनगनी उत्पन्न करैत
माउग कानि रहलए
थम्हनाइ बिसरैत सन पड़ाइत रहनाइ

नोरक कोनो मूल्य नञि भेनाइ
सार्वभौमिकता छइ
कानूनक सरहद सीमा मे छइ
धूंआ स समपृक्त अन्हार छइ
अन्हारक गह्वर मे
चकराधिन्नी करैत आकाश मे
माउग कानि रहलए
अधरतिया मे
बाट पर फौज गस्त दै छइ
गिद्धक जुलूस हवा के चीरैत चलैए
हकैतक जिला मे
लोक आँखि मुकौने ससरैत आइए
जल्दी सूति रहैए
चुप-चाप उठ' लगैए
जंगल उगैए एक-एक प्राण मे
आ
माउग कानि रहलए। कानि रहलए। कानि रहलए।

—:o:—

इजोतक लेल

अन्हार गुज्ज गाम दिस
आस्ते-आस्ते
बढ़ल आबि रहल अछि
कोनो हमर संगी
इजोतक लेल
ससरल जाइत हो सेना
कजरी लागल देवाल पर
कोनो मुक्तिकामी अपराजिता
फूलक लत्ती।

गाम जत' अनघोल होइ
जत' रीलीफक रोटी
फासीक फन्दा सन बुझाएल होइ
सामंत, मुखिया आ पुलिसक
एकटा छुट्टा गोल होइ
गाम अनघोल होइ
अन्हार घरक डिबियाक

मसरी लागल बत्ती के
कने आर उसका देलकैए
हमर संगी — इजोतक लेल
हमर घरक इजोत पसरि गेलैए
गौंसे गाम मे।

गाम जत' युवक के
पकड़ि लेलकैए कोतवाल
देवाल पर नारा लिखबाक अपराध मे
आ अपराधी बैसल हो
पुलिस-कैम्पक देखभाल मे
गाम जत' आब सिंगरहारक
फूल नञि झड़ैत होइ
सब टोल बबूरबोनी बुझाइत होइ
कतौ बाढ़ि होइ
कतौ दरारारि होइ।
बाबूसाहेबक डरे आब
लोक गाम छोड़ि नञि पड़ाइए
अन्हारो मे एक-दोसराक
बांहि पकड़ि आगू बढ़ि जाइए
एक गाम स दोसर गाम धरि
बढ़ि जाइए हमर संगी
इजोतक लेल
हमर संगी जे हमर बिचार अइ
हमर संघर्ष अइ
अन्हार गुज्ज गाम दिस।

भोर

बाजल कौआ -भेल सिनुरिया भोर
सिंगरहारक सुगंधि स मातल कन कन ओस
गाम जागल
मजूर-किसान जागल
भागल अन्हरिया आ कुहेस
किन्तु जकां ठाढ़ छैक पुलिस
गामक चारु ओर।
उड़ल चिड़इ चोंच भरि दाना लेल
खेतहि मे सुखाएल कुसियार दिस
आंखि मे फाटल धरती
भूखे कनैत बच्चाक नोर।
कोठी भरल
उमरल छल दलान
मालिकक आंगन मे
आइ नाचल
सोलहो कला सँ इन्द्रधनुषी मोर
किन्तु ई भोर
गुड्डी जकां कतबो ओ
उड़य आकाश
हमरे सबहक हाथ मे छै अनन्त डोर
उमड़ल दलान सन
सड़क आ रहलए लोक
अही माटि पर खसल छल
घाम हमर इनहोर।
अपन साम्राज्य बढ़ेबाक
बाबकाल छै होइ
हमरे शोणित सँ सुगा सन छै
धनी आ अमरीकी शासकक ठोर
हमरे गाम सन छै एल-साल्वाडोर

विभूति आनन्द

मोह

अहां एना भऽकऽ ठण्डा होयब
से नहि जनैत रही
दरकल रही अपन दुर्भाग्य पर

जे अधर-युगल
दाड़िम जकाँ भलकैत
दराड़ि जकाँ फाटल छल
भीतरसँ प्योन जकाँ साटल छल
अहाँ एना भऽकऽ भाङल होयब
से नहि जनैत रही

अहाँ कें कोन मोने बजाबी मीता ?
जकरा हम दिव्यांशु बुझने रही
ओ हिम-खण्ड निकलल
जे गीत
पराती बुझि ठोर पर अनने रही
समदाउन आ उदासी भऽकऽ बहरायल

अहाँ भालरि जकाँ डोलब—
हम नहि सोचने रही

हे ! भोर आ साँझक धूनि से

सेहो होइत छै फरक
अहाँकें कोन धूनिक नामे सम्बोधित करी !
जीवंत कहैत जीह कुचाइए
मृत कहैत कचोट होइए

जाउ, अहां तँ कहिस
अहांक सम्बोधनक तें नहि कोनो दरकार
कारण,
जे राइरि जकाँ जीवैत हो
जकरा भुलायल बच्चादानीक दर्द नहि आनल हो
जे सुखायल स्तनक कारण नहि तकने हो
आ स्पन्दन हीन होइ जकर मोन-प्राण ...
जाउ, तकरा सँ हमर कहिस
ई सहज विरोध थिक हमर अहांक नामे

भल करैत छी, जे
डाला जकां सांठल रहैत छी
पात्र जकां पाचल रहैत छी
हमर तँ माटि-पाथर आ
भरबलट्ठी धरि भऽ चुकल अछि
आ नौंता चुकल अछि हांसू
जाहिसँ निरीह छागर नहि
अताह नर-भक्षीक संहार हेतै
अहां दम्मा जकां फुलैत रहू
मकड़ा जकां झुलैत रहू
हम अपन ऐ बिचार-दलक संग
प्रस्थान कऽ रहल छी

हमरा विश्वास अछि
जे पाछा ऐ गंधक संग अहां दौगब
ओहि नेना जकां
जे मोटरक जड़ैत तेलक गंध कें
सुंघै लेल दौगैत अछि पाछू-पाछू
हम तखनो स्वीकारि लेब
मोरक भुतियायल्क स्वागत अछि

ओना अहां एते ठंढा होएब
से नहि गुनने रही
हम तँ अपन मोनक संसार बुनने रही
हे हमर मोनक बाटक कांट

तैयो हम अपेक्षा करब जे
अहां हमर मोनक चङ्केरा मे
अंकुरी जकां आयब
यंत्रणाक खापरि मे पड़ल
लावा जकां फुटब अहां
मुदा
गाय जकां नहि रहब

—:o:—

ओ परदेशी

परदेशी पहुना के देखि
ओकर आँखि मे
सहसा किछु फुला उठले
गोड़क चंचलता
कलेजा मे समा गेले
आ आंखि बाटे बतिआय लागले
परदेशी पहुना के देखि
ओकर आंखि मे
कोनो अपरिचित मरदना
ठाढ़ भए गेले
आ कोनो बहिनाक ठेसगर मजाक
कतौ बेधि देलके
आ ओ कलेजा भरि हँसऽ लागलि
आंखि मे थोड़े लाज, थोड़े आकुलता
आ एक क्षण डर सऽ
ओ कतो थकमका गेलि

परदेशी पहुना के देखि
ओ तखनियें
लाल भऽ उठलि — टुहटुह
मने भकराइ अड़हुल, वा
आम सिनुरिया, वा
कम्हरस सेब

कहलके कोनो बहिना तखनिञे जेना....
तेहन ने मिलले गुम्हुक मलीमा

कि उदास लऽब 'गाछ
फले-फुले लदि गेल

परदेशी पहुना मे देखि
ओकरा निम्मन लागऽ लाले—
उगल चनरमा/झुमैत-गाबैत मोन
मौगी-मोनसाक गप्प/सेनुर-टेकुली
आ
देहक भीतर उठैत गुदगुदी मे
बुझाय लागले दुनियाँ जहान
बसात जकित गतिमान ओकर मोन
पुनः तखनियें सुनलके—'चेहों-चेहों'
आ देखलक लड़िकोरी बनल अपना के
चारू बगल भेल थहाथही
परिजन-पुरजन के''''
कि लाजे कठौत भऽ उठलि

परदेशी पहुना के देखि
थकमकायलि ओ सहसा
भखरल कलम बाग भऽ गेलि
खुट्टी टूटल खराम भऽ गेलि
....

हर पाँच दस बरिस पर 'ई'
अबै छै परदेश कमा
किछु लऽ किछु गमा
दस दिनुक तातिल पर
मालिकक कड़ा शासन छे

दू दिन आना दू दिन जाना
(ठीक सऽ ने खाना
(छिक भरि ने पीना)
सिरिफ बचखाहा छओ दिन मजा
रोजे झमका
फेनू ठुमका
चलि जाइ छै निरमोहिया
ओ फेनू भूलि जाइए निट्ठाह
जे हमर क्यो सिउँथो छूने छै
हमर जुआनी के पीने छै
परदेशी पहुना के देखि
ओ अलसुआर रहैए
नव सऽ सांइ डेबैए
फेनू छोड़ैए
बेर-बेर सोचैए/औनाइए
किछु नहि फुराइ छै
जीवनक ऐ नीयति पर
अपने बरैए
अपने बुताइए
....
....की होइ छै शादी-बियाह
सांइ-बहुक जिनगी
किछु नञि बुझै छै
मोने-कुमोने
नव पुरुष डेबैए
कुच्छो ने बुझैए
अहिनातिये जीबैए
परदेशी पहुना के देखि

□